
Bharata Aura Angrejishiksha

भारत और अंग्रेजी शिक्षा

Document Information

Text title : Bharata Aura A.ngrejishiksha

File name : bhArataauraangrejIshikShA.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Vasudev Dwivedi Shastri

Proofread by : Mandar Mali

Description/comments : Sanskrita Prachara Pustaka Mala Sangraha 37

Acknowledge-Permission: Uttara Pradesha Sarvabhauma Sanskrit Prachar Karyalaya

Latest update : May 19, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 19, 2024

sanskritdocuments.org

भारत और अंग्रेजशिक्षा



अंग्रेज से डी डो सकता भारत का उत्थान,
पश्चिम की संस्कृति से डी डै संभव जन-कल्याण ।
यड विचार डै मडामूढता मडा अन्ध-विश्वास,
यथाशीघ्र डी डमें याडिअे करना ँसका नाश । १
अंग्रेज डी अपिल विश्व में उन्नत भाषा अेक,
यड नितान्त डै भ्रान्त धारणा और मडा अविवेक ।
रुस चीन जापान आदि डै अैसे देश मडान,
जडॉ नडी अंग्रेज का डै डोड भी सम्मान । २
डिन्डी संस्कृत और डमारी प्रादेशिक भाषायें-
यडी देश की कर सकती डै डूरी सब आशायें ।
डनकी डी उन्नति में डम सब सारी शक्ति लगावें,
अंग्रेज से भी बढःकर डम डन्डें समर्थ बनावें । ३
अंग्रेजों डे कभी दास्य से मुक्त डो गया देश,
अंग्रेज की डिन्तु दासता अव भी डै अवशेष ।
डिन्डी-संस्कृत की उन्नति में यडी बडःी डै बाधक,
सब मिल दूर भगावें ँसको भारत डे डितसाधक । ४

– रचयिता - श्री. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

Proofread by Mandar Mali

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

